जयगुरुदेव

संत दर्शिका

बाबा जय गुरु देव धर्म विकास संस्था
पिंगलेश्वर रेलवे स्टेशन के सामने, मक्सी रोड, उज्जैन
मो. 9754700200, 9575600700 www.BabaJaigurudevUjjain.com

जयगुरुदेव

सन्त उमाकान्त जी महाराज का सतसंग सुनिये:

- वेबसाइट www.YouTube.com पर चैनल BabaJaigurudevUjjain
- WhatsApp नम्बर- 8003619037
- अन्य स्त्रोत: www.Facebook.com/JaigurudevAazKiAwaz
- कुछ समय के लिए ''सतसंग'' टीवी चैनल पर सोमवार से शनिवार प्रात: 7 बजे।

www.BabaJaigurudevUjjain.com
BabaJaigurudevUjjain@gmail.com

मो - 9575600700, 9754700200

जयगुरुदेव

परम् पूज्य परम् सन्त बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज

जय गुरु देव

भूमिका

भारत जैसे धर्म परायण देश में ऋषि, मुनि, योगी, योगेश्वर व सन्तों का प्रादुर्भाव हमेशा होता रहा है। लगभग 700 वर्ष पहले सन्तमत की जानकारी कराने वाले धरती के प्रथम सन्त कबीर साहब जब से आए, आज तक देश में उनके बाद मालिक ने कई सन्तों, फकीरों को इस धरती पर भेजा। जैसे पलटू जी, नानक जी, तुलसी साहब जी, गरीब साहब जी, राधा स्वामी जी, विष्णु दयाल जी महाराज, घूरेलाल जी महाराज इसी श्रृंखला में तुलसीदास जी महाराज जिनको बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के नाम से जाना जाता है, उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव में जन्म लेकर विभिन्न परिस्थितियों में जो भी किया जीवों के लिए ही किया, शरीर से कष्ट झेलते हुए अथक परिश्रम किया। गाँव-गाँव, शहर-शहर जाकर के जीवों को जगाया, उनके खान-पान, चाल-चलन को सही किया साथ ही साथ 'नामदान' (भगवान की प्राप्ति का रास्ता) देकर साधना कराकर कितने जीवों को पार भी कर दिया। मनुष्य शरीर में 100 वर्ष से अधिक तक उन्होंने जीवों के लिये काम किया और ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी 18 मई 2012 को शरीर छोड़कर निजधाम चले गए।

शरीर छोड़ने से लगभग 5 साल पहले बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने अपने चालीसों साल साथ में रखकर सेवा लेने वाले परम् शिष्य उमाकान्त तिवारी को अपने ना रहने के बाद पुराने प्रेमियों की सम्हाल करने, नये प्रेमियों को नामदान देने की घोषणा कर दी थी। बाबा जी के मथुरा आश्रम पर शरीर छूटने के बाद विषम परिस्थिति में उमाकान्त जी महाराज सब कुछ छोड़कर खाली हाथ उज्जैन मध्य प्रदेश आ गए, जहाँ प्रेमियों के सहयोग से आश्रम बनाया और बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के पदचिन्हों पर चलते हुए देश में घूम-घूम करके लोगों को शाकाहारी, नशामुक्त, मेहनतकश, चरित्रवान, देशभक्त रहने का उपदेश तो कर ही रहे हैं साथ ही साथ मनुष्य मंदिर में यानी जिस्मानी मस्जिद में गृहस्थ आश्रम में रह करके खुदा भगवान के दीदार, दर्शन करने का तरीका बताते हुए अपने गुरु का मिशन पूरा करने में सतत् प्रयत्नशील हैं।

सन्त और सन्तमत

ऋषि, मुनि, अवतारी शक्ति, योगी, योगेश्वर से परे का दर्जा सन्तों का होता है। कलयुग में सन्त का प्रादुर्भाव जब हुआ तब उन्होंने जहाँ से शरीर चलाने वाली शक्ति जीवात्मा नीचे मृत्यु लोक में उतारी गई है, ऐसे सतलोक का भेद खोला, इससे पहले नर्क, चौरासी, स्वर्ग, बैकुंठ का ज्ञान तो लोगों को था। ये भी मालूम था कि पाप करने से नर्क जाना पड़ता है और पुण्य करने से स्वर्ग, बैकुंठ लेकिन उससे बचने का उपाय नहीं मालूम था परन्तु जब सन्त धरती पर आए तब उन्होंने अच्छा-बुरा का ज्ञान तो कराया ही, स्वर्ग, बैकुंठ और नर्क, चौरासी से बचने व जनम-मरण की पीड़ा से छुटकारा पाने के लिये नामदान दे करके भजन कराया, अन्तर में अपना परिचय दिया और जीवों को वापस सतलोक पहुँचा दिया। इसी पद्धति को सबसे अलामत सन्तमत कहा गया और जो जीवों पर सन्तों ने दया किया उसके लिए कहा गया सन्तों की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार। आध्यात्मिक दृष्टि कोण से सच पूछा जाए तो जितने भी जीव हैं सब सन्तों के बच्चे की तरह से हैं चूँकि जीव उबारने के लिए ही सन्त आते हैं इसलिए फिक्र इनकी रहती है और जो भी कार्य करते हैं या कोई माध्यम बनाते हैं तो जीवों की भलाई के लिए ही।

बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था

जनहित कार्यों के लिए बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था को 21 अगस्त 2012 को उज्जैन, मध्य प्रदेश में बनाकर रजिस्टर्ड कराया। यह संस्था आध्यात्मिक विकास के साथ ही साथ भौतिक विकास का कार्य करती है जैसे नाम योग साधना शिविर लगाना, बाबा जयगुरुदेव तथा बाबा उमाकान्त जी से लिए हुए नामदानी प्रेमियों को सुमिरन, ध्यान, भजन सिखाना, ध्यान, भजन का शिविर व केंद्र स्थापित करना, लोगों को शाकाहारी सदाचारी, नशामुक्त, ईश्वरवादी, देशभक्त बनाना आदि कार्य तो करती ही है साथ ही साथ छोटे-बड़े धार्मिक, सामाजिक, सामूहिक विवाह जैसे आयोजनों में निःशुल्क भोजन, जलपान कराने का भी काम संस्था करती है।

प्रतियोगी परीक्षा हेतु निःशुल्क कोचिंग स्कूल चलाती है, हजारों मेधावी बच्चों को प्रोत्साहन राशि (वजीफा) तथा उनके गुरुजनों (शिक्षक), प्राचार्यों को सम्मान पत्र दे चुकी है और देते रहने की योजना है, साथ ही साथ निःशुल्क अस्पताल, एंबुलेंस द्वारा कैंप लगा करके गाँव में दवा वितरण का कार्य भी निःशुल्क करती है और संस्था का गौ वंश रक्षा पर विशेष ध्यान है। संस्था मुख्यालय पर ये रचनात्मक कार्य होते हैं। अस्पताल,

गौशाला, 100 बेड का अस्पताल चालू होने वाला है, निःशुल्क भंडारा, इसके अलावा भी जगह-जगह प्रेमी भक्तों द्वारा जनहित के रचनात्मक कार्यक्रम किए जाते हैं। भविष्य में भी जनहितार्थ कार्य की योजना है। संस्था अपनी माता, धरती माता तथा गौ माता के प्रति आदर का भाव भरके सेवा करना भी सिखाती है साथ ही साथ गौशाला भी चलाती है।

बाबा उमाकान्त जी महाराज का संक्षिप्त परिचयः-

उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव में जन्म हुआ। धार्मिक परिवार में पालन-पोषण हुआ। पढ़ाई पूरी करने के बाद बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के सम्पर्क में सन् 1973 में आए। गुरु की इतनी दया हुई उन्होंने अपनी शरण व सेवा में ले लिया, नामदान दिया, ध्यान, भजन करवाया, अपनी हर तरह की नजदीकी सेवा तो दिया ही साथ ही साथ पूरे देश में सतसंग करने के लिए चिट्ठियों में इस तरह से लिख करके भेजा उमाकान्त तिवारी को भेज रहा हूँ, समझ लेना आधा मैं आ गया, किसी चिट्ठी में इस तरह से लिखकर भेजा, समझ लो मैं ही आ रहा हूँ। किसी में यह लिखकर भेजा कि इनकी बात सुनना, विश्वास करना, मैंने इनको सब समझा दिया है।

एक समय ऐसा आया जब बाबा जयगुरुदेव जी महाराज को उमाकान्त जी महाराज से संतुष्टि और विश्वास हो गया कि ये भेदभाव से अलग रहकर निस्वार्थ भाव से लोगों को जोड़कर संगत को चला ले जायेंगे, हमारे मिशन को आगे बढ़ाएंगे तो उन्होंने 16 मई 2007 को बशीरतगंज जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश) के सतसंग में ये घोषणा कर दी - 'ये उमाकान्त तिवारी हैं इनको पहचान लो ये पुरानों की सम्हाल करेंगे और नए लोगों को नामदान देंगे।'

18 मई 2012 को बाबा जयगुरुदेव जी महाराज शरीर त्याग कर जब निजधाम चले गए, धन, दौलत और स्थान के लोभी लोगों से बचकर मथुरा से सब कुछ छोड़कर खाली हाथ उज्जैन, मध्य प्रदेश आ गए। प्रेमियों के सहयोग से आश्रम व ट्रस्ट बनाया और गुरु आदेश पालनार्थ मिशन को आगे बढ़ाने के लिए पूरे देश में प्रचार-प्रसार तथा गुरु के इस दुनिया से जाने के दुख को बांटने के लिए जगह-जगह पर सतसंग किया, लोगों को समझाया, बताया कि गुरु महाराज तो शरीर से चले गए लेकिन शब्द रूप में आपके साथ हैं। जब आप सुमिरन, ध्यान, भजन मन को रोककर लगातार करने लगोगे तो आपको उसी तरह से अंतर में दर्शन होगा जैसे बाहर करते थे और जब आदेश का पालन

पालन लोगों ने करना शुरू किया तो भौतिक और आध्यात्मिक लाभ मिलने लग गया। बहुत से लोग महाराज जी के साथ जुड़ गए।

संस्कारी जीवों पर दया हुई और महाराज जी ने गुरूपूर्णिमा 22 जुलाई 2013 को जयपुर में खुले मंच से लाखों लोगों की उपस्थिति में नामदान देना प्रारंभ कर दिया। पूरे देश में आयोजित सतसंगों में अब तक लाखों लोगों को नामदान दे चुके हैं जो शाकाहारी, सदाचारी, नशामुक्त, चरित्रवान रहकर नियमित मन को रोककर सुमिरन, ध्यान, भजन करते हैं उनको बराबर अनुभूति हो रही है, पता करने पर काफी संख्या में ऐसे लोग मिलेंगे।

बाबा उमाकान्त महाराज ने बताया

इस मृत्युलोक में एक से एक राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार, पंडित, मुल्ला, पुजारी, अवतारी शक्ति, ऋषि, मुनि, पीर, पैगंबर आए। धन-दौलत, जमीन-जायजाद, मान-प्रतिष्ठा, मेहनत, ईमानदारी, कल-बल-छल, लूटपाट, लड़ाई, झगड़ा करके इकट्ठा किया लेकिन सब छोड़कर के एक दिन चला जाना पड़ा, जिसके जैसे कर्म थे उसी हिसाब से अभी भी नर्क, चौरासी में तकलीफ झेल रहे लेकिन जो सन्तों के सतसंग में गए, उनकी बातों को सुना, समझा,

समझा, अमल किया, वे जब तक यहाँ दुनिया में रहे सुख और शांति का अनुभव किया और जब समय पूरा हुआ शरीर छोड़ा तो अपने परम् पिता के पास परम् धाम पहुँच गए।

इंसान को हमेशा अपनी मौत याद रखनी चाहिए। भजन, इबादत के लिए जो इंसानी जामा यानी मनुष्य शरीर मिला, इसको गुनाहों से बचाना चाहिए और कामिल मुर्शिद यानी सच्चे गुरु की तलाश करके रास्ता लेकर थोड़ी देर सच्ची पूजा, इबादत करना, स्त्री, बच्चों व परिवार वालों को भी जरूर कराना चाहिए, इससे बच्चे बिगड़ेंगे नहीं, लोग निरोगी रहेंगे, घर में शांति रहेगी। समय निकालकर सन्तों के पास जाना, उनके सतसंग वचनों को सुनना, उनसे अच्छाई-बुराई, धर्म-अधर्म, खुदा-भगवान, देवी, देवता व सबके सिरजनहार कुल मालिक सतपुरुष की जानकारी कर लेनी चाहिए, अगर ऐसा नहीं किया तो समझ लो श्वासों की पूंजी गिनकर के खर्चा करने के लिए मिली हैं, श्वास पूरा हो जाने पर चाहे राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार, अधिकारी, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति का शरीर ही क्यों ना हो लोग इसको मिट्टी कहने लगेंगे, सड़न, गलन, बदबू से बचाने के लिए लोग जल्दी से मृतक शरीर को शमशान घाट पर ले

जाकर जला देंगे या जमींदोज कर देंगे। शरीर के सुख-सुविधा, सम्मान के लिए इकट्ठा की हुई सारी चीजें यही छूट जाएंगी। मनुष्य शरीर जैसा ही पिशाच के शरीर में जीवात्मा को बंद करके मलकुन मौत यानी यमराज के दूत इंसाफ के तख्त के सामने खड़ा कर देंगे। पैदा होने के बाद और मरने से पहले की पुण्य और पाप, अच्छाई- बुराई हर पल, हर क्षण हर इंसान का वह जो मालिक देख रहा है उसी के अनुसार कर्मों की सजा मिल जाएगी। नर्कों में मारे, काटे, तपाए, सड़ाए जाएंगे फिर नर्क की तकलीफ में कोई भी रिश्तेदार, हित मित्र, परिवार, जाति, समाज का ताकतवर व्यक्ति बचा नहीं सकता। करोड़ों जन्मों तक नर्कों में रहने के बाद कीड़ा, मकोड़ा, सांप, गोजर, घोड़ा, गधा की योनि में सजा भोगने के लिए बंद कर दिए जाएंगे। 84 लाख योनियों में गाय और बैल की योनि के बाद 9 महीने माँ के पेट में जलन, तपन, मल- मूत्र की बदबू बर्दाश्त करने के बाद मालिक की विशेष दया मिल जाने पर यह मनुष्य शरीर मिलेगा। अब आप सोचो कि अपने निजघर (मिट्टी और पत्थर जिसका अपना घर समझते हो ये नहीं) सतलोक नहीं पहुँच सकते। ये मनुष्य जिसके लिए देवता 24 घंटे मांग करते रहते हैं कि थोड़े समय के लिए ही हमको

हमको मनुष्य शरीर मिल जाता तो अपना काम बना लेते। यह बेकार चला जाता। ज्ञात हो देवताओं के 17 तत्वों के लिंग शरीर में ऐसा कोई रास्ता नहीं है कि जिससे ब्रह्म, परब्रह्म, काल, महाकाल, में होते हुए सतलोक कोई पहुँच सके लेकिन मनुष्य शरीर में है। सन्त सतगुरु से रास्ता मिल जाने पर और उस पर चलने पर देवी, देवता का दर्शन इस मनुष्य शरीर में तो होता ही है उनसे परे लोकों के धनियों और सबका मालिक सतपुरुष का भी दर्शन हो जाता है। आत्म शक्ति जगती है, आत्म साक्षात्कार जब होता है तो उसी प्रकार की शक्ति आ जाती है जैसे जिस शक्ति के द्वारा सती सावित्री ने पति के प्राणों को वापस कर लिया, सती अनुसुइया ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश को छोटा- छोटा बच्चा बना दिया, धुव्र प्रह्लाद व लंका दहन में विभीषण के घर की रक्षा हो गई, आत्म शक्ति से ही हनुमान जी ने समुद्र में छलांग लगा कर लंका दहन कर रावण को सबक तो सिखा ही दिया साथ ही साथ शक्ति बाण लगने पर लक्ष्मण के जान की रक्षा के लिए उड़कर गए और पूरा पहाड़ उठाकर के ले आए। स्मरण रहे ये सबके सब शाकाहारी, नशा मुक्त थे।

महाराज जी का कहना है कि मेरा अपना कोई बच्चा नहीं है लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण से आपको ही अपना बच्चा मानता हूँ, आपके लिए मन से चिंतन करता रहता हूँ तथा शरीर से मेहनत करता हूँ। आपके श्रद्धा, प्रेम की सेवा आप और आपके बच्चों के लिए खर्च करता रहता हूँ। आप सभी धर्म, जाति, मजहब के मानने वाले देश-विदेश के लोग मेरी बातों पर गौर करके मानने योग्य बात को अगर मान लें तो देश- विदेश में अमन-चैन हो ही जाएगा साथ ही साथ प्रकृति खुश होकर के समय पर जाड़ा, गर्मी, बरसात करने लगेगी, धरती धन-धान्य से पूर्ण होगी। रोटी, रोजी की समस्या खत्म होगी, लोग ईश्वरवादी, अध्यात्मवादी होंगे, इसी धरती पर सतयुग का नजारा दिखाई पड़ जाएगा।

कुदरत के बरखिलाफ यानी प्रकृति के प्रतिकूल काम करने की वजह से नाराज होकर प्रकृति सजा देने को तैयार खड़ी है, बचने और बचाने के लिए स्वयं चरित्रवान, शाकाहारी, नशामुक्त रहें और लोगों को बनावें। जो पैदा होने से पहले माँ के स्तन में दूध भर देता है उस पर यकीन, विश्वास करें। पापी पेट के लिए हिंसा, हत्या, लूटपाट, बेईमानी, रिश्वतखोरी, चोरी न स्वयं करें और न किसी को करने की प्रेरणा दें बल्कि इसमें लिप्त लोगों को

मानवता, सदाचार, त्याग व मानव सेवा, देशभक्ति का भी पाठ पढ़ावें। समय निकालकर थोड़ी देर सच्चे सन्त का सतसंग जरूर सुन लिया करें।

देशभक्त बनें

देश भक्ति छोटी-मोटी भक्ति नहीं होती। याद करो देश भक्ति में भगत सिंह, चंद्रशेखर, अशफाक उल्ला खां, सुखदेव, राजेंद्र लाहिड़ी जैसे वीरों ने कुर्बानी दे दी। स्वार्थपरता में पड़कर जिस धरती पर पैदा हुए, माटी में पलकर बड़े हुए, बुद्धि आयी, विवेक आया, रोटी मिली। ऐसे देश की संपत्ति को अपना समझकर हड़ताल, तोड़फोड़, आंदोलन, आगजनी हरगिज न करें क्योंकि इसके नुकसान से देश का विकास तो रुकता है और नुकसान का खामियाजा अपने को ही भोगना पड़ता है। सब लोग नियम-कानून का पालन करें। पालन कराने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों का सहयोग व सम्मान करें और हमेशा देश की आन- बान -शान बनाए रखो। भारत विश्व का सिरमौर बने इस पर विचार- विमर्श व चिंतन करते रहो।

व्यापारी अपने भाग्य (प्रारब्ध) पर भरोसा रखें। व्यापार में हमेशा जायज मुनाफा लें और मुनाफे का

परिवार की परवरिश अच्छे ढ़ग से साधन - सुविधा कुछ अंश गरीब - गुरबों के भोजन, वस्त्र व औषधि में भी खर्च कर दिया करें, इससे बरकत बढ़ जाएगी।

अधिकारी / कर्मचारी जनता को अपना बच्चा मानकर सेवा (सर्विस) करें। ऐसा भाव रखें जैसे पिता अपने बच्चे का पालन - पोषण, शिक्षा - दीक्षा व उनके उत्तम भविष्य के लिए करता है। रिश्वतखोरी से हमेशा बचें, दिल दुखाकर लाया हुआ धन फलदाई नहीं होता है। गृहस्थ जीवन में गृह कलह, रोग, मुकदमेबाजी, चारित्रिक पतन, दहेज व तलाक, खून - कतल जैसे मुकदमे में खर्च हो जाता है, ये गलत तरीके से लाया धन जहाँ भी लगता है नाश करता है। सेवाकाल के मिले कार्य को यथा सम्भव तुरन्त निपटा दिया करें।

शिक्षक गण जिस तरह से पिता अपने बच्चे के अंदर उच्च भावना, उच्च विचार भरने, उच्च स्थान पाने का प्रयास करता है, ऐसे ही शिक्षकगणों का कुछ समय के लिए विद्याध्ययन के लिए माता पिता के द्वारा सौंपे गए बच्चे - बच्चियों के लिए प्रयास होना चाहिए, न कि शारीरिक सुख, सुविधा के लिए

इसलिए मर्यादा बनाए रखना जरूरी है।

विद्यार्थी बुरी सोहबत से बचें, किसी के कहने या देखा - देखी में नशे का सेवन तथा देशद्रोही काम कभी भी नहीं करें, शाकाहारी और चरित्रवान रहें, माता-पिता की सेवा करें, गुरुजन व बूढ़े - बुजुर्ग का सम्मान करें, मेहनत से पढ़ाई करें, ऊँचे विचार और ऊँची सोच रखें, तरक्की करने के लिए हमेशा अपने बड़ों के मेहनत तथा उनके चरित्र का अनुकरण करें। हड़ताल तोड़फोड़, धरना, घेराव से किसी भी समस्या का समाधान होने वाला नहीं है, इसे भूलकर न करें, इसके नुकसान का खामियाजा अपने को ही भोगना पड़ता है, इसलिए किसी के भी उकसावे में आकर ऐसा काम न करें। हिम्मत रखें कभी भी निराश न हों, कम खाना, कम बोलना, कम सोना, बर्दाश्त करना सदैव लाभकारी तो रहता ही है विकास का भी पथ प्रशस्त करता है।

किसान सर्वविदित है कि एक मजदूर से लेकर सेठ - साहूकार, चपरासी से लेकर के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तक को रोटी खिलाने वाले दिन - रात पसीना बहाकर के खेतों में काम करने वाले काश्तकारों के मेहनत के हिसाब से पैदा किए हुए

अन्न की कीमत लागत के मुकाबले बहुत कम मिल पाती है, जरूरत पूरा ना होने पर कर्ज के बोझ से दबना पड़ता है। सूद का दर सूद देना पड़ता है, कर्ज से जल्दी छुटकारा नहीं मिल पाता है। कुछ लोग पैतृक कर्ज में पैदा हुए, कर्ज में पाले - पोसे गये और कर्ज के बोझ में दबे - दबे दुनिया से चले जा रहे हैं, यहाँ तक कि रोटी, रोजी, न्याय, सुरक्षा भरपूर ना मिल पाने की वजह से जीवन से ऊब कर आत्महत्या जैसा अज्ञानी कदम उठा ले रहे। महाराज जी ने कहा इसके लिए हमको हार्दिक कष्ट है और मैं बराबर आपकी सुख - सुविधा और शांति के लिए इस समय पर देश की व्यवस्था की बागडोर जिनके हाथ में है उनसे तो कहता ही रहता हूँ साथ ही साथ खुदा, भगवान से भी प्रार्थना करता रहता हूँ इसलिए भूमिजोतक काश्तकारों आप कभी भी आत्महत्या मत करना। यह मेरी बात मान लो और अपने खर्चे पर अंकुश रखना, जुआ, शराब तथा व्यभिचार जैसे बुरे व्यसन से बचना, मालिक पर भरोसा रखना और परिस्थितियों का मुकाबला शांतिपूर्ण ढंग से कर लेना, कुछ समय में व्यवस्था सही हो जाने पर सब ठीक हो जाएगा।

मजदूरों दिन - रात, धूप - छांव, भीषण गर्मी, ठंडी, बरसात न देखते हुए आश्रित परिवार व स्वयं के पापी पेट के लिए आप घर - घर, खेत - खेत जा करके मजदूरी मेहनत करते हो, आप इस चीज का ध्यान रखना कि आपके घर में मेहनत का ही पैसा आवे जिससे बरकत मिले, बच्चे तरक्की करें, घर में धन लक्ष्मी की कमी न होने पावे। जिसके यहाँ भी काम करो अपने काम के द्वारा उसके दिल को जीत लो, उसकी उम्मीद से भी ज्यादा अपने तन से सेवा कर के हक और हलाल का पैसा लाओ, मांस, मछली, अण्डा और नशे की चीजों से दूर रहना और शराब तो भूलकर भी मत पीना, बात मान लेने पर तुम्हारे साथ उस मालिक की दया जुड़ जाएगी।

माननीय न्यायाधीश न्याय देने का अधिकार प्राप्त स्थान भगवान का स्थान माना जाता है। पूर्व जन्म का जब अच्छा कर्म होता है तब व्यक्ति न्यायाधीश बनता है, इस स्थान की गरिमा को बनाए रखने के लिए माननीय न्यायाधीशों से ये कहना है कि आप दबाव या लालच में मत आइएगा। हमको यह मालूम है कि आपकी मेहनत और योग्यता के अनुसार धन, सम्मान नहीं मिल पा रहा है, अभाव में

बच्चों की तरक्की नहीं हो पा रही है। बहुत से लोगों को रिटायर्ड होने पर न्याय की कुर्सी छोड़ने के बाद वकील की काली कोट पहनकर के उसी कुर्सी पर विराजमान जूनियर जज के सामने खड़ा होना पड़ता है। संविधान संशोधन का प्रस्ताव जो मैंने रखा है, उसके अंतर्गत उम्मीद है निकट भविष्य में आप के साधन, सुविधा, सम्मान में बढ़ोतरी हो जाएगी। अतः आपसे अनुरोध है कि धैर्य के साथ स्थान की गरिमा को बनाये रखिएगा।

धर्म गुरु, पंडित, मुल्ला, पुजारी, मठाधीश, महंतों से यह कहना है कि इस समय कलयुग में जड़ माया (धन - दौलत), चेतन माया (स्त्रियां) का बड़ा जोर है। गृहस्थ का अन्न खाने, उनका दान दिया हुआ धन उपयोग करने, दाताओं की भलाई के लिए सेवा - भजन न करने व कराने से दोनों मायाओं का जोर तेज हो जाता है, कारागार व नर्क का दरवाजा खुल जाता है इसलिए आप बुराइयों से बचने के लिए मौत और समरथ गुरु के वचन को हमेशा याद रखो। जो स्थान आपको मिला है, उसकी गरिमा को बनाए रखो। गृहस्थ का खाया हुआ नमक अदा करो उनके बीच जा करके उनका खान - पान, चाल - चलन, विचार, व्यवहार सही रखने का ईश्वरवादी, खुदापरस्त बनने का पाठ पढ़ाएं और इस मानव शरीर

इबादत कर के अंतर में जो देवी - देवताओं का दर्शन, खुदा का दीदार होता है उसको करिए और लोगों को कराइये और अगर आपको तरीका नहीं मालूम है तो किसी जानकार के पास उनको जाने की प्रेरणा दीजिए। याद रहे धृतराष्ट्र को 106 जन्म के पीछे के बुरे कर्म के कारण अंधा होना पड़ा था। चूक जाने पर आप को भी कहीं कर्मों की सजा न मिल जाए।

संविधान में परिवर्तन

देश में बढ़ती हजारों स्वार्थी राजनैतिक पार्टियां जब तक नहीं खत्म होगी तब तक जातिवाद, एरियावाद, भाषावाद, नक्सलवाद, माओवाद, आतंकवाद, भाई - भतीजावाद, खत्म नहीं हो सकता है। व्यवस्था सही हो नहीं सकती क्योंकि इन पार्टियों में भर्ती लोगों में नैतिकता, सदाचार, त्याग, सेवा, देशभक्ति की भावना खत्म सी होती जा रही है। जब पक्ष में रहते हैं तो कुछ और बोलते हैं, हार जाने पर सत्ता पक्ष का विरोध करते - करते सारी मर्यादाओं की सीमा लांघ जाते हैं । महाराज जी ने कहा मेरा यह सुझाव है कि एक बार देश की सभी छोटी - बड़ी राजनीतिक पार्टियां खत्म कर दी जाएं और देश की परिस्थितियों का सर्वे कराकर

सर्वसम्मत से देश को चलाने के लिए व्यवस्था बनाई जाए। शाकाहारी, नशामुक्त, चरित्रवान, खुदा परस्त यानी ईश्वरवादी देश प्रेमी लोगों को राजनैतिक पार्टी तथा अन्य कतिपय स्थानों से लोगों को निकालकर आचार संहिता के अनुसार इन्हीं में से कुछ को पक्ष में और कुछ को विपक्ष में बैठाकर देश चलाया जाय तो व्यवस्था ठीक हो जाएगी, सबको रोजी, रोटी मिलने लगेगी, कुदरत के बरखिलाफ काम नहीं होगा। लोग भजनानन्दी, ईश्वरवादी, बन जाएंगे। नीयत सही हो जाएगी तो बरकत मिलने लगेगी। सारी समस्याओं का समाधान निकल आयेगा।

भारत का संविधान बहुत पुराना हो गया। जिन परिस्थितियों को देख करके संविधान बनाया गया था उसमें और अब में बहुत अंतर हो गया। बहुत से संविधान के विशेषज्ञ रहे भी नहीं। समय परिस्थिति के अनुसार लोगों को रोजी, रोटी, न्याय, सुरक्षा, सम्मान, सुख - शांति दिलाने के लिए संविधान में संशोधन की आवश्यकता है। संविधान का पालन व रक्षा करने, कराने तथा देश को चलाने में प्रजातंत्र के सभी अधिकार प्राप्त मुख्यमंत्री, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्य न्यायाधीश, चुनाव आयुक्त, धर्मगुरु एक राय मिला करके देश की परिस्थितियों का

अध्ययन करके संविधान में परिवर्तन कर दें। परिवर्तन हो जाने पर कोई भी अधिकारी, कर्मचारी, सुरक्षाधिकारी, सिपाही, न्यायाधिकारी पापी पेट के लिए बिकेगा नहीं, लेखनी बिकेगी नहीं, अहलकार सेवा करेंगे, व्यापारी चिंता मुक्त होकर के व्यापार करेंगे, सुविधा प्राप्त किसान मेहनत से कमाए हुए अन्न का भरपूर मुनाफा जब पाएंगे तो आत्महत्या नहीं करेंगे। स्कूल से निकलते ही बच्चों को नौकरी, काम मिल जाएगा, ईमानदारी - मेहनत से काम करने वाले अधिकारी, कर्मचारी, व्यापारी को तरक्की व सम्मान मिल जाएगा। हर तरह के झगड़े खत्म हो जाएंगे। अमन चैन छा जाएगा, लोग ईश्वरवादी - खुदा परस्त बनकर समरथ गुरु से रास्ता लेकर इसी मानव मंदिर में इबादत, भजन करके अंतर में देवी - देवताओं, फरिश्तों का दर्शन करने लगेंगे, अनहद वेदवाणी, गैबी आवाज सुनने लगेंगे, नर्क, चौरासी से छुटकारा मिल जाएगा, मानव जीवन सफल हो जाएगा, दोबारा फिर इस दुःख के संसार में आना ही नहीं पड़ेगा। जातिवाद, कौमवाद, परिवारवाद, एरियावाद, भाषावाद सब खत्म हो जाएगा, जिसके पास खाने को है खाएगा, जिसके पास नहीं है उसको मिल जाएगा तो गरीबी और अमीरी की खाई पट जाएगी। लड़ाई,

झगड़ा, झंझट सुलझाने का सरल रास्ता सब निकल आएगा। गौहत्या, पशु पक्षी व मानव हत्या बन्द होने पर दया धर्म आयेगा। नीयत दुरुस्त हो जाने पर बरकत मिलने लगेगी, कुदरत के बरखिलाफ काम बंद हो जाएगा फिर कुदरत खुश होकर समय पर जाड़ा, गर्मी, बरसात देने लगेगी, लोग खुशहाल नजर आयेंगे। खून कत्ल, गृह युद्ध, दूसरे देश से युद्ध की संभावनाएं खत्म हो जाएंगी, फौजियों की जान तो बचेगी ही देश का रक्षा बजट भी बहुत कम हो जाएगा, बजट का बचा हुआ धन विकास में खर्च होगा। विज्ञान व अध्यात्म में तरक्की होगी तो भारत विश्व का गुरु व सिरमौर होगा, लोगों को सतयुग का आनन्द मिलने लगेगा।

महाराज जी ने कहा - देश में कल कारखाना लगाने व अन्य निवेश के लिए जो कम्पनियां आ रही यदि कम मूल्य पर वे सामान बेचने लगीं तो भारत के उद्योग ठप होंगे और भारत के उद्योग धंधे बंद हो जाएंगे तो फिर वे अपने सामान का दाम बढ़ा देंगे फिर मजबूरी में लोगों को ऊँचे भाव में खरीदना पड़ेगा। अब जब उनका रहन - सहन, घुसपैठ यहाँ के लालची अधिकारी, कर्मचारियों के बीच में हो जाएगा। की - पॉइंट पर बैठे हुए लोग उनके वश में

हो जायेंगे तो कानून व्यवस्था उन्हीं के हाथ में चली जाएगी और अगर देश के धर्म गुरुओं को धन व पद का लालच देकर अपने वश में कर लिया तो भारतीय संस्कृति ही खत्म हो जाएगी।

यद्यपि देश चलाने वाले अधिकारी, नेता अच्छे भाव, अच्छी सोच रख करके देश के विकास के लिए उनको बुला रहे हैं लेकिन आगे चलकर ये कम्पनियां लोगों के लिए दुखदाई बन सकती हैं, जब ज्यादा विदेशियों का रहना, खाना, उठना, बैठना, सोना हो जाएगा। ये बहुसंख्यक हो जाएंगे। तो देश की सुरक्षा, समृद्धि की गारंटी नहीं रह जाएगी जैसा कि कुछ समय पहले व्यापार करने आने वाले अंग्रेजों ने कब्जा जमा लिया था। मेरा सुझाव तो ये है देश के होनहार बच्चों को बाहर भेजकर कुछ दिन काम सिखाकर वापस बुला लिया जाए और व्यापार नीति में परिवर्तन करके सेठ, साहूकारों को छूट देकर के कल - कारखाने जगह - जगह खुलवा दिए जाएं और ट्रेनिंग किए हुए बच्चों को सुविधा देकर लगा दिया जाए। छोटे - छोटे लोगों को भी उद्योग लगाने का अवसर मिल जाएगा। बेरोजगारी तो दूर होगी ही सरकार का भी राजस्व बढ़ जाएगा।

जयगुरुदेव

सन्त उमाकान्त जी महाराज के शिक्षात्मक कथन

1. ऐ इन्सान! तू आँख खोल। महात्मा फकीर तुझे बुला रहे हैं। उनके चले जाने के बाद तेरे दिल में यादगार और तड़प ही रह जाएगी।
2. याद रखो ! भारत जैसे देश में जब माँ, बहन, बहू, बेटी की पहचान खत्म हो जाती है तब महाभारत जैसा विनाश होता है इसलिए चरित्रवान बन जाओ।
3. सदैव याद रखो! जो तुम कर रहे हो, उसको मालिक देख रहा है और जो कह रहे हो उसको वह सुन रहा है। एक दिन पल-पल का हिसाब तुमको देना पड़ेगा।
4. दिल दुखाकर लाया हुआ धन खून की तरह से होता है। इसलिए मेहनत और ईमानदारी की ही कमाई करो।
5. क्रोध को पी जाओ। क्रोध आवे तो चुपचाप बैठकर आँख बन्द करके मालिक को याद करने लग जाओ।
6. आत्म धन के बराबर कोई भी धन नहीं है। इसी धन से अर्थ, धर्म, काम व मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।
7. जग के धन, मान व प्रतिष्ठा किसी का भी बराबर साथ नहीं दिया, इसमें लिप्त लोगों को धोखा ही मिला।

08. अरे इन्सान! तूने अपने जबान के स्वाद के लिए दया (रहम) छोड़ दिया।

09. लूट-पाट, रिश्वतखोरी का अन्न खिला करके परिवार व बच्चों का भविष्य खराब मत करो।

10. ऐसा खराब समय आगे आ रहा है कि नास्तिक को भी खुदा, भगवान एक मिनट में याद आ जाएगा।

11. हिंसा, हत्या बन्द करो। हत्या बढ़ी तो भूत चैन से जीने नहीं देगें।

12. साधु, महात्मा, पंडित, मुल्ला, मौलवी, फकीर, ग्रन्थी, पादरी, पुजारी, महन्त, मठाधीश के अब आपके बैठने का समय नहीं है, कुदरती कहर से बचने और बचानें में लग जाए।

13. नाम वह शक्ति है, पावर है जो समस्त संसार को चला रहा है। बेशुमार त्रिलोकियां, अगणित ब्रह्माण्ड उस नाम के आधार पर टिके हैं और विहार कर रहे हैं।कभी नाम की कमाई से चीजें प्राप्त होती थीं, अब भी हो सकती है बल्कि कलयुग में तो और आसानी से प्राप्त हो सकती है। जब आप सत्संग सनेंगे तब सब बातें समझ में आजाएंगी।

14. समुद्र देवता, पवन, देवता, मेघराज, अग्नि देवता लोगों के बुरे कर्मों से नाराज हो गये हैं। सजा देगें पाप से बचो और बचाओ।

15. दुनिया बनाने वाला ही जब मिल जाता है तो दुनिया की चीजों के लिए भागना नहीं पड़ता है, वह स्वतः ही मिल जाती है।

16. अब ऐसा कुदरती कहर का समय आ गया है कि आप सब लोग शाकाहारी, चरित्रवान, नशे से मुक्त, देश प्रेमी, धर्म प्रेमी बनकर कुदरती कहर का मुकाबला करो, नहीं तो अस्तित्व ही मिट जाएगा।

17. सत्य, अहिंसा, परोपकार और सेवा रूपी सच्चे धर्म को अपना लोगे तो जाति-पाँति, भाषावाद, क्षेत्रवाद यह सब खत्म हो जाएगा। फिर इन्सान को इन्सान से प्रेम हो जाएगा। मानव मंदिर जो मालिक को प्राप्त करने के लिए मिला, इसको कोई गिराएगा नहीं यानी मानव हत्या के पाप से बच जायेगा।

18. जो निभ्या और जिभ्या पर कन्ट्रोल रखता है, कहीं पर भी रहता, सुखी रहता है।चरित्रहीन व्यक्ति बगैर मणि के सर्प की तरह से हो जाता है।

19. यह मत सोचो की आंख बचा कर जो गलत काम कर रहे हैं उसे मालिक देख नहीं रहा है। उसके कैमरे से आप कहीं भी बच नहीं सकते

20. समय के सन्त-सतगुरु के दर्शन-दीदार करने, अपनी बात कह देने से ही तकलीफों में आराम मिल जाता है।

21. जैसे मकड़ी अपने बनाये जाल में फंस कर मर जाती है, ऐसे ही मनुष्य अपना घर बसाने के लिए, धन इकट्ठा करने में ही फंसकर अपना जीवन रूपी अनमोल समय गंवा देता है।

22. पहले के समय में महात्माओं के मार्गदर्शन से लोगों में इतना आत्मबल, आत्म शक्ति थी कि जिस चीज की इच्छा करते, वो पूरी हो जाती थी, जो आज भी संभव है।

23. सतगुरु जब मिलते हैं तब रास्ता भी बताते हैं, रास्ते पर चलाते भी हैं और मंजिल तक पहुंचाते भी हैं।

24. शंका जहां पर भी होती है वहां नाश होता है। इसलिए शंका का समाधान कर लेना चाहिए।

25. सुख और दुख अच्छे और बुरे कर्मों के ही फल हैं। जीव हत्या करोगे तो नर्कों की यातना भोगनी ही पड़ेगी।

26. प्रारब्ध की एक-एक चीज मिलती है, ये प्रारब्ध में भी परिवर्तन ला देते हैं। परन्तु सन्त की दया प्रारब्ध को भी बदल देती है। जो नही भी मिलने का है, मिल जाता है।

27. शराब अपराध और भ्रष्टाचार की जननी है। यदि शराब बन्द कर दी जाए तो कल से ही भ्रष्टाचार और अपराध कम होना शुरु हो जाएगा।

28. संत सतगुरु की दया से तीसरी आंख खुल जाने पर खुदा, भगवान एक ही दिखते हैं।

29. पहले के समय में सन्त महात्मा सद्गुरु गुरु से राय लेकर ही लोग काम करते थे। उनसे आशीर्वाद लेकर उनके निर्देश पर जब चलते थे तभी राजा और प्रजा का जीवन सुखी रहता था।

30. हिंसा-हत्या करने वाला इंसान मालिक की नजरों से दूर हो जाता है। सुकून शान्ति खो देता है, मुक्ति मोक्ष तो उसके लिए संभव है ही नहीं।

31. मनुष्य शरीर 84 लाख योनियों में चक्कर काटने के बाद भजन इबादत करने के लिए मालिक ने दिया है। यह मानव मंदिर है, इसी में वह मालिक मिलता है। ईंट और पत्थर के मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर गिराने की माफी के बारे में तो कभी विचार भी हो सकता है, लेकिन मानव मंदिर यानी जिस्मानी मस्जिद गिरा देने यानी मानव हत्या कर देने की माफी कभी होती ही नहीं है, सजा भोगनी ही पड़ती है।

32. सन्त-सतगुरु किसी दाढ़ी बाल व वेशभूषा का नाम नहीं होता, उनके अन्दर आध्यात्मिक शक्ति होती है, उनके दर्शन व वाणी वचन से ही काफी लाभ मिल जाता है। इसलिए तो पहले के समय में लोग उनके पास जाया करते थे और शिक्षा, दीक्षा लेकर निर्देश के अनुसार जब काम करते थे, तो इसी गृहस्थ आश्रम में स्वर्ग जैसा आनन्द मिलता था। आज की तरह से लोग घर के झगड़ा-झंझट से घर छोड़कर भागते नहीं थे, औरतें जल कर मरती नहीं थी, दहेज और तलाक के मुकदमे चलते ही नहीं थे।

33. फकीर तो जात-ए-खुदा होते हैं। खुदाई आवाज सरजमीं पर फैलाते हैं। उनकी तकरीरों में शिरकत करने से ही निजात का रास्ता मिलता है।

34. ये काल का देश है, सन्त इस देश में मालिक की दया श्रोत लेकर मेहमान की तरह आते हैं और वे परम् पिता व अपने निज घर की याद दिलाते हैं, मना करके, समझा-बुझा करके रास्ता बताकर, उस पर चला करके निजधाम पहुंचाकर मालामाल कर दिया करते हैं। जो लोग उनके उपदेश से अलग हो जाते हैं, उन पर काल सन्त से आंख बचाकर अपना दाव लगा ही देता है।

35. होशियार हो जाओ! थोड़ी सी नासमझी विश्व युद्ध का कारण बन सकती है। विश्व युद्ध को टालने के लिए जिम्मेदार समय से विचार-विमर्श कर लें।जन धन की हानि से बचत हो सकती है।

36. सच्चे संत के सतसंग में शरीक होने वालों को बीमारी तकलीफ में राहत तो मिलती ही है, श्रद्धा भावभक्ति के अनुसार कामना भी पूरी होती है।

37. अपने देवी-देवता, गुरु को सम्मान दिलाने के लिए, दूसरे के पीर पैगम्बर एवं आराध्य की निन्दा मत करो।

38. शिव नेत्र सबके पास है। समर्थ गुरु की दया से खुल सकता है याद रहे शंकर जी ने कभी भी नशे का सेवन नहीं किया। इसलिए उनके नाम पर नशा करके उनको बदनाम मत करो। ये भी समझ लो बलि चढ़ाने से देवता खुश कभी नहीं होते है।

39. कुछ समय के बाद गऊ हत्या बन्द हो जायेगी। देश में गऊ हत्या ही नहीं,किसी भी पशु पक्षी की हत्या नहीं होगी। लोगों की नीयत सही हो जायेगी। लोग नशामुक्त शाकाहारी हो जायेंगे। लोग दूसरे के धन को जहर और दूसरे की मां बहन को अपनी मां बहन की तरह से समझने लगेंगे।

40– समर्थ गुरु के उपकार का बदला जीव बिना उनकी रहम के कभी चुका ही नहीं सकता।

41. सेवा से इन्सान, इन्सान के दिल को तो जीत लेता ही है बल्कि खुदा की बनाई हुई चीजों को क्या, खुद खुदा को भी वश में कर लेता है।

42. फकीर – महात्माओं के कलाम कभी झूठे नहीं होते। वह जो बोल देते हैं वो होकर ही रहता है।

43. सन्त – सतगुरु से राय लेकर काम करने पर ही राजा और प्रजा का जीवन सुखी रहता है।

44. अच्छे भाव रखो, अच्छा चिंतन करो, अच्छे लोगों के पास उठो –बैठो।

45. इबादती यानी भजनानन्दी माताओं के बच्चे बुद्धिमान और नेक होते हैं।

46. हमारे देश की नारियाँ देवी क्यों कहलायीं? क्योंकि समर्थ गुरु से रास्ता लेकर अपनी आत्मा को जगायीं।

47. मन मनुष्य का राजा बन गया, जैसा वो कहता है, उसी तरह से शरीर के अंग काम करने लगते है। मन को वश में करने का चीमटा संतों के पास होता है।

48. जिभ्या के स्वादी मनुष्य के अन्दर से दया खत्म हो जाती है और निभ्या के स्वादी मनुष्य के अन्दर से माँ बहन की पहचान खत्म हो जाती है।

49. मनुष्य का मन कन्ट्रोल से बाहर होकर गलत कामों में लग गया, सही करने का तरीका केवल सन्तों के पास होता है।

50. समर्थ गुरु द्वारा दिया गया नाम से ही उद्धार होता है।

51. सन्तों की दया से अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है।

52. जिस धरती पर जन्म लिये हो, उसकी शान को बनाये रखने के लिए देशभक्त बनो।

53. देश की सम्पत्ति आपकी अपनी है। इसको नष्ट करने का कोई कार्य मत करो।

54. जब दिव्य दृष्टि खुलेगी तब खुदा भगवान गॉड एक ही दिखेंगे।

55. ख्वाहिशों की इबादत से सपने में भी वो मालिक मिलने वाला नहीं है।

56. याद रहे! सत्संग वचन से अच्छाई मिलती है व बुराई दूर हो जाती है।

57. दिव्य दृष्टि खुलने का रास्ता बताने वाले गुरु के मिल जाने पर ही लोक-परलोक बनता है।

58. घड़ी बता रही है कि जीवन का एक-एक पल निकलता जा रहा है। सोचो! मौत के बाद कहाँ जाएंगे?

59. गुनाहों का अम्बार फकीर के रहमत की नजर से ही जला करता है। इसलिए उनके दरबार की हाजिरी जरूरी होती है।

60. सदैव याद रखो! झूठ बोली हुई बात कुछ समय के बाद भूल जाती है। इन्सान उसको छिपाने के लिए कई झूठ बोलता है, फिर भी छिप नहीं पाती। सत्य बात हमेशा याद रहती है, इसलिए सत्य ही बोलो।

61. किसी के बहकावे में आकर हड़ताल, तोड़ फोड़, आन्दोलन, धरना, घेराव मत करना। देश की सेवा का मौका पाने के लिए देश भक्त बनना पड़ेगा।

62. मनुष्य के बिना लगाम के चलने से समाज बर्बाद हो जायेगा।

63. इस समय पर झोंपड़ी से महल तक में रहने वाले लोग दुःखी है। मानसिक शान्ति नहीं है। लड़ाई-झगड़ा, बीमारी, प्रेत बाधा, कुदरती कहर। इनसे कैसे छुटकारा मिलेगा? इसका रास्ता लोगों को नहीं मिल रहा है। गैर जानकारी में लोग भटकते रहते हैं, जान तक चली जाती है।

64. आध्यात्मिक विज्ञान संसार के सभी विज्ञान से आगे है। इसका ज्ञान हो जाने पर हनुमान जी जैसी ताकत बदन में आ जाती है जो उड़कर गये और संजीवनी बूटी का पहाड़ उठाकर ले आये थे।

65. श्वासों की पूंजी गिन करके खर्च करने के लिए मिली है। जो जैसा खर्च करता है, उसी तरह से उम्र कम व ज्यादा होती है।

66. परमेश्वर से गुरु बड़े गावत वेद पुराण, बिना दया गुरुदेव के मिले नहीं भगवान।

67. जीवात्मा के घाट पर बैठोगे तभी सच्चा आनन्द मिलेगा।

68. आज अभी से ही शाकाहारी रहने तथा शराब नहीं पीने का संकल्प बना लीजिए।

69. इसी मानव मन्दिर में जीते जी भगवान का दर्शन होता है।

70. परमार्थ के तीन स्तम्भ - सतसंग, सेवा और भजन।

71. मनुष्य का मन कन्ट्रोल से बाहर होकर गलत कामों में लग गया, सही करने का तरीका केवल सन्तों के पास होता है।

72. रहम करो रहमान मिलेंगे - दया करो भगवान मिलेंगे।

73. जो रूहों पर रहम करेगा - वही खुदा का प्यारा है।

74. माता-पिता की सेवा करो - उनके आशीर्वाद से फूलो फलो।

75. गऊ माता की जान बचाओ - गाय को राष्ट्रीय पशु बनाओ।

76. विश्व बने धर्मात्मा - पापों का हो खात्मा।

77. माँ बहनों की लाज बचाना है, तो शराब मांस को हटाना है।

78. सतसंग गंगा में जो नहायेगा, भव सागर पार हो जायेगा।

79. आगे का समय विनाशकारी, बचे वही जो शाकाहारी।

80. हाथ जोड़ कर विनय हमारी - हो जाओ सब शाकाहारी।

81. जय गुरु देव नाम बोल करके कोई गलत काम मत करना वर्ना सजा मिल जाएगी।

प्रार्थना-01

गुरुदेव तुम्हारे चरणों में सत कोटि प्रणाम हमारा है ।
मेरी नैया पार लगा देना कितनों को पार उतारा है ।
मैं बालक अबुध तुम्हारा हूं तुम समरथ पिता हमारे हो ।
मुझे अपनी गोद बिठा लेना दाता लो भुजा पसारा है।
यद्यपि संसारी ज्वालाएं हम पर प्रहार कर जाती हैं ।
पर शीतल करती रहती है तेरी शीतल अमृत धाराएं ।
जब आंधी हमें हिला देती ठंडी जब हमें कँपा देती ।
मुस्कान तुम्हारे अधरों की दे जाती हमें सहारा है
इस मूर्ति माधुरी की झांकी यदि सदा मिला करती स्वामी ।
सौभाग्य समझते हम अपना कौतुहल एक तुम्हारा है ।
कुछ भुजा उठा कर कहते हो कुछ महामंत्र सा पढ़ते हो ।
गद् गद् हो जाता हूं स्वामी मिल जाता बड़ा सहारा है।
इस मूर्ति माधुरी की झांकी यदि सदा मिला करती स्वामी ।
सौभाग्य समझते हम अपना कौतूहल एक तुम्हारा है।
फिर बारंबार प्रणाम करूं, चरणों में शीश झुकाता हूं।
मैं पार अवश्य हो जाऊंगा गुरु ने पतवार संभाला है ।

प्रार्थना-02

घट घट में गुरु विराज रहे, कोई देखन वाला देखे।
जन जन को गुरु पुकार रहे, कोई सुन ले तो गुरु भेटे।
पर वह पथ किसका देखा, जो पहुंचावे निज देशा।
गुरु बिन सब जीव भुलाय रहे, भटके चौरासी रीते।
बड़ भाग्य जीव का जागे तब आवे सतगुरु आगे।
सत्संग के वचन प्यारे लगें , तब सुरत शब्द में पागे।
मूरख क्या जानहि भेदा, गुरु को जिन मानुष देखा।
सतगुरु का वह सतरूप भला, ऐसे नर कैसे देखें।
मेरी अरज सुनो गुरु दाता, मोहि एक तुम्हारी आशा।
मेरे अंदर आप विराज रहो, मैं जयगुरुदेव भरोसे।

प्रार्थना-03

जब लौं शरण न सतगुरु जइहो।
तब लौं हे मन चौरासी में घुमरी घुमरी फिर अइहो।
कोटि जन्म जब भटका खाया। तब यह नर तन दुर्लभ पाया। सोई फिर वृथा नसइहो। जब लौं।।1।।
काल कठोर दया नहीं लावे, नाना विधि तोहि नाच नचावे। त्रिगुण फांस फंसइहो। जब लौं।।2।।
जग में बंधन अगणित डारा, सब जीव फिरें बंधे तेहि लारा, क्यों कर तुम बच पइहो। जब लौं।।3।।
याते सतगुरु शरणा ताको, सुरत शब्द मत ले घट झांको, नहीं तो सिर धुन धुन पछतइहो।। जब लौं।।4।।

जाके शरण मिटे भव तापा, चिर सुख मिले रहे नहीं आपा, तेहि बिन नाम रतन कहां पाइहो।। जब लौं।।5।।
अलख अगम गुरुदेव अनामी, संतन के प्रिय सतगुरु स्वामी, कस तिन माहीं समइहो।। जब लौं।।6।।

प्रार्थना-04

तुम नाम जपन क्यों छोड़ दिया।
क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया।
झूठे जग में जी ललचा कर असल वतन क्यों छोड़ दिया।
कौड़ी को तो खूब संभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया।
जिन सुमिरन से अति सुख पावे तिन सुमिरन क्यों छोड़ दिया।
खालस एक सतगुरु भरोसे, तन मन धन क्यों न छोड़ दिया।

प्रार्थना-05

सदा संसार में सतपुरुष नर तन धर के आए हैं, मगर संसार वाले क्या कभी पहचान पाए हैं।
हितोपदेश को मूरख न समझे रार की उनसे, भयंकर फल मिला उनको अयश दुनियां में पाए हैं।
स्वयं भगवान के अवतार राम आये जगत में थे, मगर माता पिता सुत राम को वन में पठाये हैं।

वह रावण जाति का ब्राह्मण जो चार वेदों का पंडित था,
न सच्ची राम की माना युद्ध कर सिर गंवाए हैं।
लोग सोलह कला के कृष्ण को अवतार कहते हैं,
कंस मामा विरोधी बन के अत्याचार ढ़ाये हैं।
कंस जरासंध कौरव ने न मानी बात केशव की,
सखा अर्जुन बिचारे भी नहीं पहिचान पाए हैं।
इसी से कृष्ण के रहते नरक जाना पड़ा उनको
तो उनका हाल क्या होगा रार इनसे मचाये हैं।
अभी कलयुग में काशी में कबीर आये न पहिचाना,
दुखी काशी से होकर आप मगहर को सिधाए हैं।
भक्त रविदास मीरा के गुरु काशी में जब तक थे,
यहां से हो दुखी मरवाड़ में कुटिया बनाए हैं।
शिरोमणि भक्ति मीरा रानी जिसका नाम रोशन है,
उन्हें व्यभिचारिणी कहकर महल से निकलवाये हैं।
गोस्वामी जी जिनकी आज रामायण है घर - घर में,
उन्हें भी कौन पहिचाना प्राण लेने को धाये हैं।
यह दुनियादार कितना कष्ट उनको भी दिये देखो,
विपत सब घट रामायण में स्वयं लिखकर बताये हैं।
अयोध्या के संत पलटू जिन्होंने खोलकर गाया,
उन्हे जिंदा ही घर में बंद करके जलाए हैं।
यही था हाल ईसा का जिन्हें शूली पर लटकाया,
कहे प्रभु बक्श देना ये नहीं पहचान पाये हैं।
रसूल आये खुदा के जब मुहम्मद शहर मक्के में,

कुरैश उनके ही कुनबे वाले दुश्मन बन सताए हैं।
छोड़ मक्का मदीना में पनाह लेना पड़ा उनको, महा
संघर्षमय जीवन मुहम्मद ने बिताये हैं।
हकीकत से जुदा मुस्लिम सम्स तबरेज ने देखा,
हकीकत क्या बताने पर खाल उनके खिंचाये हैं।
सत्य के वास्ते गुरु तेग बहादुर सामने आये,
तो अत्याचारियों ने शीश उनके भी उड़ाये हैं।
वेद वादी ऋषि दयानंद आर्यों को जगाते थे,
उन्हें विष दे के मारा हानि हम सबने उठाये हैं।
सत्यवादी अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी
मार गोली आततायी दिया जलता बुझाए हैं।
बहुत विपद झेल कर सन्त जीवों को उठाते हैं,
खड़े जो हो गए पीछे वही गुणगान गाये हैं।

प्रार्थना-06

निज चरणों का दरश करा दो गुरु, मुझे प्रेम दीवानी बना दो गुरु।
जगत जाल से दूर हटा कर मुझे शीशे में रूप दिखा दो गुरु।
कुल कुटुम्ब से दूर हटाकर मुझे, सहस कमल दिखला दो गुरु।
घंटा शंख सुना कर मुझको, त्रिकुटी धाम बता दो गुरु ।
गगन शिखर का दरस कराकर, मुझे दसवां द्वार लखा दो गुरु।
मान सरोवर कर्म धुला कर मुझे, हंस स्वरूप बना दो गुरु।
महासुन्न होये भंवरगुफा पर, मेरे काल के जाल तुड़ा दो गुरु।

....39

सतलोक सतरूप दिखाकर मुझे, बीन की तान सुना दो गुरु।
अलख अगम का भेद बता कर मुझे जयगुरुदेव गोद बिठा दो गुरु।

प्रार्थना-07

यह प्रेम सदा भरपूर रहे, गुरुदेव तुम्हारे चरणों ।
यह अर्ज मेरी मंजूरी रहे, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में।
निज जीवन की यह डोर प्रभु ।
तुम्हें सौंप दई पकड़ो, इसको।
उद्धार करो यह दास पड़ा गुरुदेव तुम्हारे चरणों में।
यह प्रेम...
संसार में देखा सार नहीं।
तब श्री चरणों की शरण गही।
भवबन्ध कटे यह विनती है।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में। यह प्रेम...
नयनों में तुम्हारा रूप रमें।
मन ध्यान तुम्हारे में मगन रहे।
तन अर्पित तव सेवा में रहे।
गुरु देव तुम्हारे चरणों में। यह प्रेम...
जो शब्द मेरे मुख से निकले।
मेरे नाथ उसे समझे पिघले।
मेरे भाव सदा ऐसे ही रहे ।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में।
यह प्रेम सदा भरपूर रहे गुरुदेव तुम्हारे चरणों में।
यह अर्ज मेरी मंजूर रहे। गुरुदेव तुम्हारे चरणों में ।

प्रार्थना-08

भरोसो चरण कमल का तेरे ।
सांस सांस पर आस तुम्हारी और ना काहू केरे ।
जब से जीव भया संसारी फिरे काल के फेरे ।
सुधि बुधि भूल रहा निज घर की सपनेहु हरि नहीं हेरे।
परम दयालु हरि निज जनहित रूप धरा नर केरे।
जयगुरुदेव बतायो नाम निज भेज दियो घर पूरे ।
जाग - जाग अब क्यों नहीं जागे हरि आए बिन हेरे।
चरण कमल पर शीश चढ़ाकर भाग जगा निज लेरे।
भरोसो चरण कमल का तेरे ।

प्रार्थना-09

जयगुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव जयगुरुदेव।
मेरे मातु-पिता गुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
सब देवन के देव गुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
तिनके चरण कमल मन सेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
जीव काज जग आये गुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
अपना भेद बताये गुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
सत्य स्वरूपी रूप गुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
अलख स्वरूपी रूप गुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
अगम स्वरूपी रूप गुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
पुरुष अनामी रूप गुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
सबके स्वामी आप गुरुदेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।
उनकी शरण मेरे लेव, जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव।

प्रार्थना-10

छोड़ कर संसार जब तू जाएगा,
कोइ न साथी तेरा साथ निभाएगा।
गर गुरु का भजन किया न, सत्संग किया ना दो घड़ियाँ।
यमदूत लगा कर तुमको, ले जायेंगे हथकड़ियाँ।
कौन छुड़वाएगा? कोइ न साथी तेरा साथ निभाएगा।
इस पेट भरण के खातिर, तू पाप कमाता निस दिन।
शमशान में लकड़ी रखकर,तेरे आग लगेगी एकदिन।
खाक हो जाएगा। कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।
क्या कहता मेरा मेरा, यह दुनिया रेन बसेरा।
यहां कोइ ना रहने पाता ,है चंद दिनों का डेरा।
हंस उड़ जाएगा। कोइ न साथी तेरा साथ निभाएगा।
सत्संग की बहती गंगा, तू इसमें लगा ले गोता।
वर्ना इस दुनिया से , जाएगा एक दिन रोता-रोता।
फेर पछतायेगा, कोइ न साथी तेरा साथ निभाएगा।
गुरुदेव चरण में निश दिन, तू प्रीत लगा ले बन्दे।
कट जायेंगे सब तेरे, ये जनम मरण के फंदे।
पार हो जायगा, कोइ न साथी तेरा साथ निभाएगा।
छोड़ कर संसार जब तू जाएगा,
कोइ न साथी तेरा साथ निभाएगा।

प्रार्थना-11

अब मन आतुर दरस पुकारे। कल नहिं पकड़े धीर न धारे ।
दम दम छिन छिन दर्द दिवानी। सोऊं न जागूं अन्न न पानी।
बेकल तड़पूं पिया तुम कारण। डस डस खावत चिंता नागिन।
कौन उपाय करूं अब सजनी, भवजल से अब काहेको तरनी।
यही सोच में दिन दिन जलती। कोई न सम्हाले आली पल पल गलती।
पिया तो बसे मेरे लोग चतुर में। मैं तो पड़ी आय मृत्यु नगर में।
बिन मिलाप प्रीतम दुख भारी। राह चलूँ नहि जात चला री।
घाट बाट जहं अति अंधियारी। कोई न सुने मेरी बहुत पुकारी।
जतन न सूझे हिम्मत हारी। अपने पिया की मैं ना हुई प्यारी।
जो पिया चाहें तो दम में बुलावें। शब्द डोर दे अभी चढ़ावें।
भाग्यहीन मैं धुन नहीं पकड़ी। काम क्रोध माया रही जकड़ी।
सुरत शब्द मारग जो पाया। सो भी मुझसे गया न कमाया।
मैं तो सब विधि हीन अधीनी। मन नहीं निर्मल सुरत मलीनी।
तुम समर्थ स्वामी अति परवीना। मैं तड़पूँ जैसे जल बिन मीना।
काज करो मेरा आज सम्हारी। तुम्हरी शरण स्वामी मैं बलिहारी।
हार पड़ी अब तुम्हरे द्वारे। तुम बिन अब मोहिं कौन निकाले।
तब स्वामी बोले अस बानी। मौज निहारो रहो चुप ठानी।
धीरज धरो करो विश्वासा। अब करूं पूरन तुम्हरी आशा।
सुनत वचन अब शीतल भई। चरण शरण स्वामी निश्चल गही।।

प्रार्थना-12

तेरे भरोसे मेरी जिंदगी है, चरणों में तेरे स्वामी मेरी बंदगी है।
रात दिवस, मैं तुझको ना भूलूं।
जो कुछ मौज हो, सब कुछ सहलूं।
टूटे न नाता, यही बंदगी है।।1।।
बनता नहीं मुझसे साधन भजन अब,
चलती नहीं मेरी काबिज मन पर।
रहे याद तेरी, यही बन्दगी है।।2।।
धरम -करम का भेद न जानूं,
अपना पराया स्वामी कुछ भी न मानूं,
सौंप रहा तुझे, अपनी जिंदगी है,।।3।।
चाहे तू जिसको जरिया बना ले।
नाले को चाहे दरिया बना दे।
बड़े बड़ों की हस्ती मिटी है।।4।।
प्रकट रूप तेरा में संतों में पाऊं।
जयगुरुदेव स्वामी बलि बलि जाऊं,
पाने से पहले बड़ी गन्दगी है।।5।।

प्रार्थना - 13

लिखने वाले! तू हो के दयाल, लिख दे।
मेरे हृदय बिच सतगुरु का प्यार लिख दे।।
माथे पर लिख दे, ज्योति गुरु की,
आंखों में स्वामी का दीदार लिख दे। मेरे..
जिव्हा पै लिख दे, नाम गुरु का,
कानों में शब्द झंकार लिख दे।मेरे...
हाथों पर लिख दे, सेवा गुरु की,
तन मन धन उन पर वार लिख दे। मेरे....
इक मत लिखना मेरे गुरु का बिछुड़ना,

प्रार्थना-14

गुरु बचा लोगे जिसको वो बच जाएगा,
फेर लोगे नजर तो वो फँस जायेगा।
तेरी नजरों में कोई करामात है,
हर समय होती अमृत की बरसात है,
उसको विरला ही कोई समझ पाएगा।
वह दया दृष्टि जिस पर भी हो जाएगी,
भाग्य उसकी तत्क्षण सुधर जाएगी।
वह सुफल उसका नरतन भी हो जाएगा।
बन चुका भार कोई हो, संसार का,
फेर ली हो नजर जिससे, सब प्यार का,
सब तरफ का भी हारा, संभल जाएगा।
तन में शक्ति नहीं, धन भी रत्ती नहीं
धर्म की भी तरफ भाव भक्ति नहीं।
मन दुराचार में जो रम जाएगा।
जिसको तेरे सिवा और कोई नहीं।
रात दिन तेरी भक्ति में, सोई नहीं।
अंग संग उसके तब तू ही हो जाएगा।
जो नजर तेरी नजरों में डाले खड़ा,
धन्य वह हो गया भाग्यशाली बड़ा,
उसका यमदूत कुछ भी ना कर पाएगा।
दीन दुखिया हूँ मैं तेरे द्वारे पड़ा,
पाप से भर चुका है ये मेरा घड़ा।
जो किया है उसी का, वो फल पाएगा।

...45

तेरे अतिरिक्त किसको पुकारूँ गुरु,
तेरी मूरति सुरति में उतारूँ प्रभू,
नाम नौका पै चढ़ दास तर जाएगा।
नाम तेरा में मुख से उचारुँ प्रभू,
अपने अन्तः करण में निहारुँ प्रभु,
दीप जलते ही सब पाप धुल जाएगा।
दीप के साथ ध्वनियाँ भी, बजने लगीं,
स्वर्ग वैकुंठ की रेल चलने लगी,
देव भी ऐसे साधु का गुण गाएगा।

प्रार्थना-15

यह विनती गुरुदेव हमारी ।।टेक।।
गुरुपद स्नेह छूटे नहिं कबहीं। भाव छुटे संसारी ।
नित नव प्रेम जगे तुम्हारे प्रति रहहूँ नाम अधारी।
शब्द कूप की सुरत हमारी बनी रहे पनिहारी।
शब्द अमिय रस पियई निरंतर झूले अधर मझारी।
सहस कमल दल छिन में उतरे हे त्रिकुटी लेई सम्भारी।
निरखई हंस रूप वह अपना खोले द्वार केबारी।
गुफा पार सतनाम समाये सुख दुःख से होये न्यारी।

प्रार्थना-16

मेरे प्यारे गुरु दातार, मंगता द्वारे खड़ा।
मैं रहा पुकार पुकार, मेहर कर देखो जरा।।
मोहिं दीजै भक्ति दान, काल दुःख बहुत दिया।
मेरे तड़प उठी हिय माहिं, दरस को तरस रहा।।

...46

बरसाओ घटा अपार, प्रेम रंग दीजै बहा।
सुरति भीगै अमिय रस धार, तन मन होवै हरा।।
मेरा जीवन सफल हो जाए, तुम गुण गाऊँ सदा।
मैं नीच अधम नाकार, तुम्हारे द्वारे पड़ा।।
मेरी विनती सुनो धर प्यार, घट उमगाओ दया।
स्वामी जी पिता हमार, जल्दी पार किया।।
जय गुरुदेव स्वामी पिता हमार, जल्दी पार करो।।

प्रार्थना-17

इतनी शक्ति मुझे दो मेरे सतगुरु,
तेरी भक्ति में खुद को मिटाता चलूं।
चाहे राहों में कितनी मुसीबत पड़े,
फिर भी तेरा दिया गीत गाता चलूं।
दूसरों की मदद की जरूरत नहीं,
मुझको केवल तुम्हारी मदद चाहिए।
लड़खड़ाये न मेरे कदम राह में,
नाम का तेरे, डंका बजाता चलूं।
नाव बोझिल मेरे पूर्व के पाप से,
सो न जाऊं, यही डर सताता मुझे।
चाह मुझको नहीं, धर्म की, अर्थ की,
काम की, मोक्ष की, भी जरुरत नहीं।
उम्र भर तेरे उल्फत की मस्ती रहे,
तेरी महिमा निरंतर सुनाता रहूँ।
इतना वरदान दे दो मेरे देवता,
खुद जगूं और जगत् को जगाता चलूं।

प्रार्थना-18

खोज री पिया को निज घट में ।।
जो तुम पिया से मिलना चाहो। तो भटको मत जग में।।
तीरथ,बरत, करम, आचारा। ये अटकावे मग में।
जब लग सन्त मिले नहिं पूरे। पड़े रहोगे अघ में।
नाम सुधा रस कभी न पाओ। भरमो योनि खग में।
पंडित, काजी, भेख शेख सब। भटक रहे डग -डग में।
इनके संग पिया नहिं मिलना। पिया मिले कोई साध समग में।
यह तो भूले विषय बास में। भर्म धसे इनकी रग-रगमें।
बिना संत कोई भेद न पावे। वे तोहि कहें अलग में।
जब लग संत मिलें नहीं तुमको। खाय ठगौरी तू इन ठग में।
सतगुरु शरण गहो तुम प्यारे। रलो ज्योति जगमग में।

आरती-01

विनय करूं मैं दोऊ कर जोरे, सतगुरु द्वार तुम्हारे।
बिन घृत दीप आरती साजूँ, दोऊ अंखियन मझधारें।
भाव सहित नित बैठ झरोखे, जोहत प्रियतम प्यारे।
पग ध्वनि सुनूं श्रवण हिय अपने, मन के काज बिसारे। जागी
सुरत पियत चरनामृत, पियत पियत हुई न्यारे।
घंटा, शंख, मृदंग, सारंगी, बंसी बीन सुना रे।
जय गुरु देव आरती करती गावत जय जय कारे।
विनय करू में दोऊ कर जोरे।

आरती-02

आरती करुं गुरुदेव की जिन भेद बतायो।
चरण कमल की छाँह में जिन सुरति बिठायो।।
जनम जनम के पाप को, जिन दूर हटायो।।
मो सम पतित पुनीत करि, निज हृदय लगायो।।
दीन दयालु दया करी, दियो शब्द जहाजा।
सुरति चली निज लोक को, मन परम हुलासा।
सुरति चली आकाश में, धरी अनहद नादा।।
सतगुरु मिल गये राह में, ले परम प्रकाशा।।
अभिनंदन निज लोक में, करें किन्नर देवा।
भाग्य सराहें सुरति कर लावें बहु सेवा।।
काल कर्म के फांस से, लिये जीव बचाई।
गुरु दयाल दया करी, निज घर पहुंचाई।
आरती करुं गुरुदेव की, जिन भेद बतायो।
चरण कमल की छाँह में, जिन सुरत बिठायो।

प्रकाशन में हुई किसी प्रकार की गलती के लिए
प्रकाशक क्षमा प्रार्थी है।

आर. बी. वर्मा
महामंत्री, बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था,
उज्जैन, म.प्र. द्वारा देव प्रिंटर्स, इंदौर में मुद्रित
व दिनांक 16-11-2017 को प्रकाशित।
मोबाइल-9575600700, 9754700200

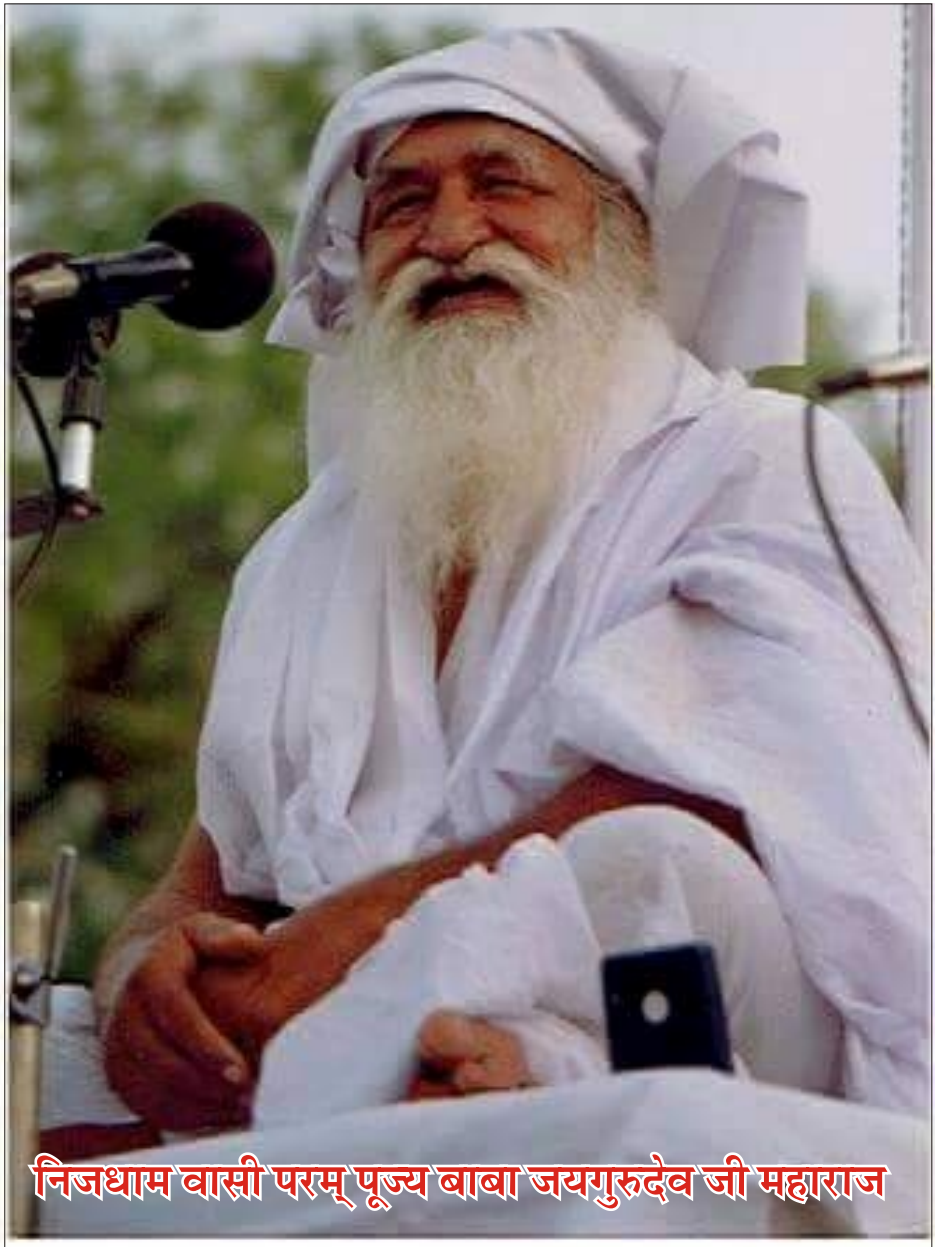

निजधाम वासी परम् पूज्य बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

सत्त पुरुष की आरसी, सन्तन की ही देह।
लखना चाहो अलख को, इन्हीं में लख लेह॥

जय गुरु देव

बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी सन्त उमाकान्त जी महाराज

मैं तो ऐसा सतगुरु पाया।
मेरा रोम–रोम हरषाया॥